



श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री



श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

पंच-गौरव जिला पुस्तिका श्रीगंगानगर



जिला प्रशासन, श्रीगंगानगर



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वरूप प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)



सुमित गोदारा

मंत्री, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति
एवं उपभोक्ता मामले विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर



संदेश

माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा जन कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से आमजन के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। जनहित को प्राथमिकता देते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बुनियादी ढांचे, महिला सशक्तिकरण और रोजगार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू करते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलने का प्रयास किया जा रहा है।

इसी कड़ी में राज्य सरकार द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। इसके माध्यम से प्रदेश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक, वनस्पति सहित विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं को जहां एक और संरक्षण मिल सकेगा, वहीं उनके विकास के लिए आवश्यक गतिविधियां संचालित की जायेंगी।

राज्य सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, बिजली, रोजगार और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। युवाओं के लिए कौशल विकास केंद्र, महिलाओं के लिए स्वरोजगार योजनाएं, खेलों के प्रोत्साहन और सांस्कृतिक संरक्षण के उपाय सभी वर्गों को सशक्त और आत्मनिर्भर बना रहे हैं।

कृषि और ग्रामीण विकास पर भी विशेष ध्यान देते हुए किसानों को उन्नत बीज, उर्वरक और सिंचाई सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित किए जा रहे हैं। किसान सम्मान निधि योजनाओं में केंद्र एवं राज्य सरकार की ओर से मिलने वाली वित्तीय सहायता से कृषक वर्ग को आर्थिक संबल भी मिल रहा है।

आइए, सभी मिलकर इस विकास यात्रा को गति दें और जिले को प्रगति के नए आयामों तक पहुंचाने का संकल्प लें। आप सभी से अपील है कि जनहित में चलाई जा रही योजनाओं में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें और जिले को विकास की नई ऊँचाइयों तक पहुंचाने में योगदान दें। पंच गौरव पुस्तिका प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

जय हिंद ।

सुमित गोदारा



राजेश यादव

आई.ए.एस.

प्रमुख शासन सचिव

स्वायत शासन विभाग एवं

जिला प्रभारी सचिव श्रीगंगानगर



संदेश

माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा आमजन के कल्याण के साथ-साथ सर्वांगीण विकास के लिए अनेक कदम उठाये जा रहे हैं। युवाओं को रोजगार, महिलाओं को सुरक्षा, विद्यार्थियों को शिक्षा, आमजन को स्वास्थ्य सुविधाओं से लेकर खेत-खलिहान तक राज्य सरकार द्वारा अभूतपूर्व कार्य किये जा रहे हैं।

इसी कड़ी में राज्य सरकार द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। इसके माध्यम से प्रदेश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक, वनस्पति सहित विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं को जहां एक ओर संरक्षण मिल सकेगा, वहीं उनके विकास के लिए आवश्यक गतिविधियां संचालित की जायेंगी।

प्रदेश के स्थानीय निकायों के लिये भी राज्य सरकार की ओर से महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये हैं, जिसकी वजह से आमजन को मिलने वाली सुविधाओं में बढ़ोत्तरी हुई है। राज्य सरकार की समग्र विकास की नीतियों की बदौलत प्रदेश वर्तमान में उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नेतृत्व में विकास की यह यात्रा निरन्तर जारी रहेगी, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं श्रीगंगानगर जिले की पंच गौरव पुस्तिका प्रकाशन के अवसर पर बधाई देता हूं।

जय हिंद।

राजेश यादव



डॉ. रवि कुमार सूरपूर

आई.ए.एस.

संभागीय आयुक्त
संभाग बीकानेर



संदेश

माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नेतृत्व में राज्य सरकार जन कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से आमजन के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक, वनस्पति सहित विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं को संरक्षण दिये जाने के उद्देश्य के तहत पंच गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की गई है। जिसके तहत प्रत्येक जिले में विभिन्न क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक गतिविधियां संचालित की जाएंगी।

पंच गौरव कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य स्थानीय हस्तशिल्प उत्पादों की गुणवत्ता एवं विपणन क्षमता में सुधार के साथ स्थानीय क्षमताओं का संवर्धन, खेलों के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार एवं रोजगार के अवसर सृजित करना है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जिले की विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच गौरव” के रूप में श्रीगंगानगर जिले में एक जिला-एक उत्पाद (सरसों का तेल), एक जिला-एक उपज (किन्नू), एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति (शीशम), एक जिला-एक खेल (एथलेटिक्स) एवं एक जिला-एक पर्यटन स्थल (गुरुद्वारा बुड्डा जोहड़) चिन्हित किए गए हैं।

राज्य सरकार की समग्र विकास की नीतियों की बदौलत प्रदेश वर्तमान में उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से यह यात्रा निरन्तर जारी रहेगी, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं श्रीगंगानगर जिले की पंच गौरव पुस्तिका प्रकाशन के अवसर पर बधाई देता हूं।

जय हिंद

डॉ. रवि कुमार सूरपूर



डॉ. मंजू

आई.ए.एस.
जिला कलेक्टर एवं जिला
मजिस्ट्रेट, श्रीगंगानगर

संदेश

माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान की संवेदनशील, पारदर्शी एवं जवाबदेह सरकार की ओर से प्रदेश की उन्नति के लिए निरंतर कार्य किए जा रहे हैं।

इसी संदर्भ में प्रदेश के प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण-संवर्धन के साथ-साथ आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है।

पंच गौरव कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य स्थानीय हस्तशिल्प उत्पादों की गुणवत्ता एवं विपणन क्षमता में सुधार के साथ स्थानीय क्षमताओं का संवर्धन, खेलों के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार एवं रोजगार के अवसर सृजित करना है।

प्रसन्नता है कि श्रीगंगानगर जिला प्रशासन द्वारा पंच गौरव की कार्य योजना से जन-जन को अवगत करवाने के लिए पंच गौरव पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है। पुस्तिका प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद।

डॉ. मंजू

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	जिला एक दृष्टि	1-4
2.	पंच गौरव कार्यक्रम की जानकारी	5-8
3.	एक जिला—एक उपज किन्नू	9-14
4.	एक जिला—एक वनस्पति शीशम	15-21
5.	एक जिला—एक उत्पाद सरसों का तेल	22-29
6.	एक जिला—एक खेल एथलेटिक्स	30-36
7.	एक जिला—एक पर्यटन स्थल गुरुद्वारा बुड्डा जोहड़	37-39

जिला एक दृष्टि—श्रीगंगानगर

1. भौगोलिक क्षेत्रफल :	1093290 हैक्टेयर			
2. कुल जनसंख्या (2011)	1969168			
	पुरुष	1043340	महिला	925828
	ग्रामीण	1507766	शहरी	461402
	अनुसूचित जाति	720412	अनुसूचित जनजाति	13477
3. जनसंख्या वृद्धि दर	10.04			
4. लिंगानुपात	887			
5. कुल साक्षरता दर	69.64			
6. जनसंख्या घनत्व	पुरुष	78.50	महिला	59.70
	201			
7. उपखण्ड कार्यालय	09	(श्रीगंगानगर, करणपुर सूरतगढ़, पदमपुर, सादुलशहर, रायसिंहनगर, श्रीविजयनगर, अनूपगढ़, घड़साना)		
8. नगरपरिषद	02	(श्रीगंगानगर, अनूपगढ़)		
9. नगर विकास न्यास	01	(श्रीगंगानगर)		
10. नगरपालिका	09	(केसरीसिंहपुर, गजसिंहपुर, करणपुर, पदमपुर, सूरतगढ़, लालगढ़, सादुलशहर, रायसिंहनगर, श्रीविजयनगर)		
11. पंचायत समिति	09	(श्रीगंगानगर, करणपुर, सूरतगढ़, पदमपुर, सादुलशहर, रायसिंहनगर, श्रीविजयनगर, अनूपगढ़, घड़साना)		
12. ग्राम पंचायत	344			
13. तहसील	11	(श्रीगंगानगर, करणपुर सूरतगढ़, पदमपुर, सादुलशहर, गजसिंहपुर, रायसिंहनगर, श्रीविजयनगर, घड़साना, अनूपगढ़, रावला)		
14. उपतहसील	12	(हिंदुमलकोट, बीजवायला, चुनावड़, केसरीसिंहपुर, रिडमलसर, लालगढ़, मिर्जावाला, राजियासर, मुकलावा, 365 हैड, जैतसर, राजियासर)		
15. कुल ग्राम	3024			
आबाद ग्राम	2861			
गैर आबाद	163			

श्रीगंगानगर जिला एक नज़र

1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

बीकानेर सम्भाग के चार जिलों में यह सूदूर उत्तरी जिला है। थार रेगिस्तान के रेतीले धोरों से आच्छादित राजस्थान प्रदेश के उत्तरी भू- भाग का जीवन्त जनपद श्रीगंगानगर अपने में अनूठा इतिहास संजोए हुए है। जोधपुर के निर्माता राव जोधा के पुत्र राव बीका ने सन् 1488 में बीकानेर की स्थापना की थी। कहा जाता है कि बीकानेर के इतिहास में ही गंगानगर जिले का इतिहास छिपा है। राव बीका के उपरांत राव लूणकरण ने बीकानेर राज्य पर राज किया। लूणकरण के पुत्र जर सिंह ने बीकानेर राज्य की सीमाओं को बढ़ाने के लिये अनेक प्रयास किये। वीर और निर्भीक राजपूत शासकों के साहस पूर्ण प्रयत्नों से 15 वीं शताब्दी में एक नये बीकानेर राज्य का निर्माण किया गया। वर्तमान में गंगानगर जिले के नाम से ज्ञात यह भू-भाग भूतपूर्व बीकानेर रियासत का भाग रहा है। भूतपूर्व बीकानेर रियासत वृहद राजस्थान के संयुक्त राज्य के अंतर्गत शामिल हुई और बीकानेर रियासत के अन्य भागों में गंगानगर, निजामत का क्षेत्र राजस्थान राज्य का हिस्सा बना और 30 मार्च 1949 को मामूली समायोजन के साथ गंगानगर क्षेत्र को नये जिले का रूप दिया गया।

गंगनहर आने से पूर्व गंगानगर शहर एक छोटा सा गांव था जो भूतपूर्व रियासत मिर्ज़वाला तहसील में रामनगर के नाम से जाना जाता था। गंगनहर आने के पश्चात यहां मण्डी की स्थापना हुई , सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि होने के पश्चात इस क्षेत्र में व्यापार और उद्योगों में वृद्धि हुई। वृद्धि होने से यह मण्डी महाराजा गंगा सिंह के नाम पर "श्रीगंगानगर" के नाम से जानी गई।

1.2 भौगोलिक स्थिति:

श्रीगंगानगर जिला राजस्थान के उत्तर दिशा में स्थित है। यह जिला 28.4 डिग्री से 30.6 डिग्री अक्षांश उत्तर तथा 72.2 डिग्री से 75.3 डिग्री देशान्तर के पूर्व मध्य में स्थित है। इस जिले के दक्षिण में बीकानेर, उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान का बहावलपुर जिला उत्तर-पूर्व में नवगढ़ित पंजाब का फाजिल्का जिला तथा दक्षिण पूर्व में नवगढ़ित हनुमानगढ़ जिला है। माह जुलाई 1994 में राज्य सरकार ने एक अधिसूचना के द्वारा पूर्व श्रीगंगानगर जिले का विभाजन कर हनुमानगढ़, नोहर व भादरा उपखण्ड को मिलाकर एक नया जिला हनुमानगढ़ का निर्माण किया। इस प्रकार अब पुनर्गढ़ित श्रीगंगानगर जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 1093290 हैक्टेयर रह गया है।



1.3 टॉपोग्राफी, (धरातल सरंचना)

श्रीगंगानगर जिला प्रदेश की विस्तृत मरुभूमि का एक मैदानी भाग है। इसके पश्चिम में बलुवा भूमि है। सामान्यतः बालू मिट्टी के टीलों की ऊँचाई 4 से 5 मी. है। कहीं कहीं पर 10 से 15 मी. ऊँचे टीले भी हैं। जिले में कोई महत्वपूर्ण पहाड़ नहीं है। जिले का उत्तरी हिस्सा, दक्षिणी एवं दक्षिण पूर्वी हिस्सों से तुलनात्मक रूप से जंगलों से आच्छादित है। जिले की औसत ऊँचाई समुद्र तल से 168 से 227 मीटर के मध्य है। जिले में रेतीली दोमट मिट्टी श्रीगंगानगर, पदमपुर, करणपुर व रायसिंहनगर तहसील में तथा वर्षा आधारित रेतीली मिट्टी घड़साना, सूरतगढ़, अनूपगढ़ व सादुलशहर तहसील में है। चिकनी मिट्टी जिले की विजयनगर, सूरतगढ़ एवं अनूपगढ़ तहसील के कुछ क्षेत्र में पाई जाती है। तहसील विजयनगर के कुछ क्षेत्र में रेतीली मिट्टी भी पाई जाती है।

1.4 जलवायु एवं वर्षा:

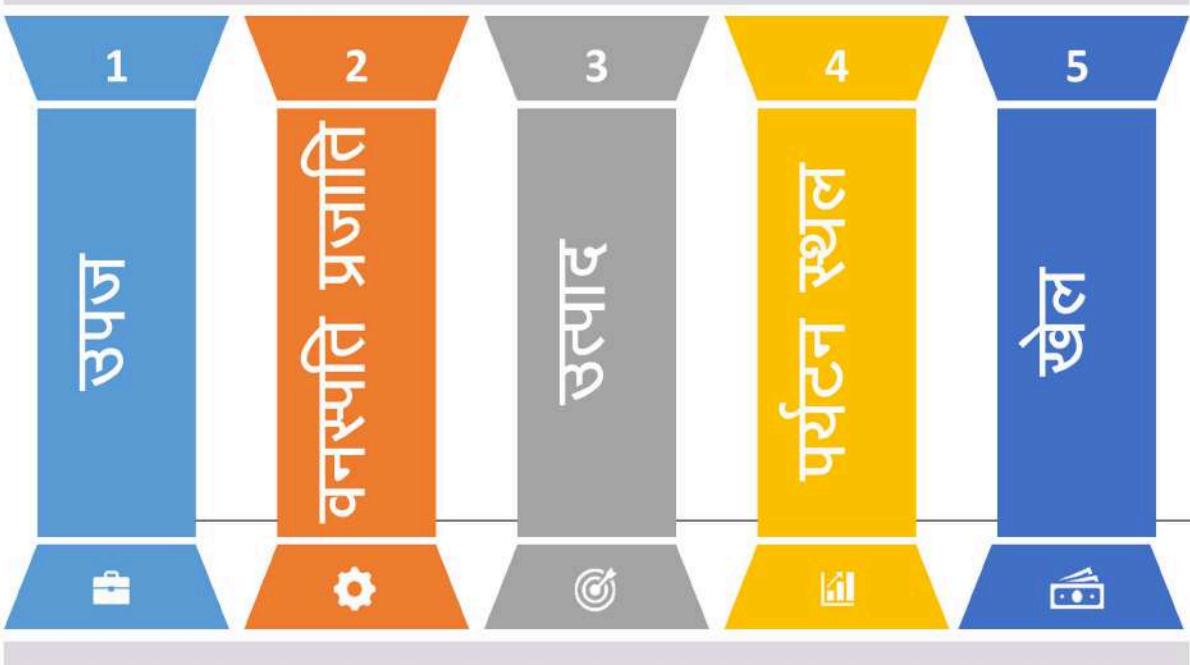
जिले की जलवायु में काफी भिन्नता है। जिला शुष्क एवं कम वर्षा से प्रभावित है। शीतऋतु नवम्बर से प्रारंभ होकर मार्च तक ही रहती है। इसके बाद ग्रीष्म ऋतु अप्रैल से जून तक रहती है। जुलाई के मध्य से सितम्बर की अवधि तक दक्षिण पश्चिम मानसून का प्रभाव कम रहता है जबकि सितम्बर से अक्टूबर तक मानसून के बाद का मौसम रहता है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 341.3 एम.एम. है। मौसम विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार जिले में गर्मी के मौसम में उच्चतम तापमान 48 डिग्री सेल्सियस तथा सर्दी के मौसम में न्यूनतम तापमान जमाव बिन्दु तक जाता है।

1.5 प्रशासनिक सरंचना:

प्रशासनिक दृष्टि से श्रीगंगानगर जिला मुख्यालय पर जिला कलेक्टर तथा विभिन्न जिला स्तरीय कार्यालय स्थित हैं। जिले को छः विधानसभा क्षेत्र एवं नौ उपखण्ड में विभक्त किया गया है। इस प्रकार राजस्व प्रशासन के लिए जिले को 11 तहसीलों तथा नौ विकास खण्डों में विभक्त किया गया है। जिले में दो नगरपरिषद गंगानगर एवं अनूपगढ़ तथा नौ नगरपालिकाएँ हैं।

“पंच गौरव” कार्यक्रम

Pillars of Pride



2024—25

पंच—गौरव कार्यक्रम

1. प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियाँ भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में “पंच—गौरव” कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच गौरव” के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए हैं।

2. कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पतिक प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सुजित करना।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैशिक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

3. कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार जिला स्तरीय समिति का गठन किया गया है:-

क्र.स.	अधिकारी का नाम	पद
1.	जिला कलक्टर, श्रीगंगानगर	अध्यक्ष
2.	महाप्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र श्रीगंगानगर	सदस्य
3.	उपनिदेशक, उद्यान विभाग, श्रीगंगानगर	सदस्य
4.	उपवन संरक्षक, वन विभाग, श्रीगंगानगर	सदस्य
5.	जिला खेल—कूद अधिकारी, खेल विभाग, श्रीगंगानगर	सदस्य
6.	जिला पर्यटक अधिकारी, पर्यटन विभाग, श्रीगंगानगर	सदस्य
7.	एनालिस्ट कम प्रोग्रामर (ACP), सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग श्रीगंगानगर	सदस्य
8.	सहायक निदेशक, सूचना एवं जन—सम्पर्क विभाग, श्रीगंगानगर	सदस्य
9.	लेखा अधिकारी, कलैक्ट्रेट श्रीगंगानगर	सदस्य
10.	उपनिदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी, श्रीगंगानगर	सदस्य सचिव

जिला स्तरीय समिति के कार्यः—

1. जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
 2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्ययोजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
 3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
 4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
 5. पंच गौरव-जिला पुस्तिका तैयार करना।
- 4. पंच गौरव कार्यक्रम की प्रभावशीलता एवं उपयोगिता:-**

- ❖ **स्थानीय विशेषता:-**— जिले की संस्कृति और स्थानीय संसाधनों को ध्यान में रखते हुए 'एक विशिष्ट कृषि उपज, वनस्पतिक प्रजाति, उत्पाद, पर्यटन स्थल और खेल' को चिन्हित कर इनके प्रोत्साहन, संरक्षण एवं विकास हेतु गतिविधियां संपादित की जायेंगी।
- ❖ **समुदाय की भागीदारी:-**— पंच गौरव कार्यक्रम के तहत स्थानीय समुदायों को शामिल किया जाएगा ताकि वे अपने जिले की विशेषताओं को पहचान सकें और उन्हें बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा सकें।
- ❖ **विकासात्मक दृष्टिकोण:-**— पंच-गौरव कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संरक्षण है, बल्कि यह आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में भी सहायक है।
- ❖ **प्रशिक्षण और जानकारी:-**— युवाओं/स्थानीय लोगों को संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान की जाएगी, जिससे वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

एक जिला—एक उपज किन्नू



ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि :-

श्रीगंगानगर जिले में फलों के रूप में सर्वाधिक लोकप्रिय फल किनू है। विश्व में किनू फल सर्वप्रथम अमेरिका कैलीफोर्निया में सन् 1935 में कृषि वैज्ञानिक होवार्ड बी.फरोस्ट द्वारा तैयार किया गया। किनू को दो प्रमुख फलों King (Citrus nobilis) एवं Willow Leaf (Citrus x delociosa) द्वारा तैयार किया गया। इस प्रकार किनू एक हाइब्रिड फल है जो प्रमुख रूप से अमेरिका के कैलीफोर्निया, पाकिस्तान व भारत सहित अनेक देशों में पैदा किया जाता है। भारत में सर्वप्रथम राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले में श्री करतार सिंह नरुला के द्वारा दो पौधों से इसकी खेती प्रारम्भ की गई। तत्पश्चात् राजस्थान सहित भारत के अनेक राज्यों में इसका उत्पादन किया जाने लगा। मुख्य रूप से पंजाब एवं राजस्थान में किनू की सर्वाधिक पैदावार होती है।



पंच गौरव कार्यक्रम
वर्तमान परिदृश्य :-

श्रीगंगानगर

श्रीगंगानगर जिला राजस्थान के सिंचित उत्तर पश्चिमी क्षेत्र खण्ड (1बी) के अन्तर्गत आता है। इस जिले में सिंचाई का मुख्य साधन तीन नहर प्रणाली—गंग कैनाल, भाखड़ा कैनाल व इन्दिरा गांधी नहर परियोजना है। इसके साथ-साथ मुख्य नहरों एवं घरघर नदी क्षेत्र में टयूबवैल से भी सिंचाई की जाती है।

श्रीगंगानगर जिला फसल उत्पादन की तरह ही बागवानी क्षेत्र में भी राजस्थान का सिरमौर जिला है। यहां 12500 हैक्टेयर क्षेत्र में फलों के बगीचे स्थापित है, जिसमें से किन्नू (किंस X विल्लो लीफ) नींबू वर्ग के मैन्डेरिन समूह की एक उन्नत किस्म है। किन्नू की उत्पादकता 150–190 किंवंटल प्रति हैक्टेयर होती है व इस वर्ष का उत्पादन लगभग 310000 मैट्रिक टन है। गंगानगरी किन्नू पंजाब, राज्य के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अपनी लालीयुक्त चमक, पतले छिलके, रसीले व मिठासयुक्त स्वाद के कारण देश में ही नहीं विश्व में विशेष पहचान बना चुका है। श्रीगंगानगर जिले में सर्वप्रथम स्वर्गीय श्री करतार सिंह नरुला जिन्हें किन्नू का पितामाह भी कहा जाता है, किन्नू के पौधे पाकिस्तान से लाये थे। इसके बाद से आज तक श्रीगंगानगर किन्नू के क्षेत्र में नित नये आयाम स्थापित कर रहा है। गंगानगरी किन्नू की मांग केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी है। इस का निर्यात बांग्लादेश, भूटान, नेपाल इत्यादि देशों में किया जा रहा है।

श्रीगंगानगर जिले में वर्ष 2004–2005 तक किन्नू का क्षेत्रफल बहुत कम था। वर्ष 2005–06 में राष्ट्रीय बागवानी मिशन लागू किया गया जिसके कारण निरन्तर किन्नू फल का उत्पादन बढ़ता गया। वर्तमान में श्रीगंगानगर जिले में लगभग 12500 हैक्टेयर में किन्नू फल का उत्पादन किया जाता है। श्रीगंगानगर जिले से वर्ष 1995–96 में 375 टन एवं 1996 से 98 में 250 टन किन्नू का निर्यात थाइलैण्ड, मलेशिया, नेपाल भूटान, इंग्लैण्ड आदि देशों में किया गया। इसके पश्चात किन्नू ने अपनी विशेष पहचान बनाकर गंगानगरी किन्नू के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

विवरण	किन्नू
कुल क्षेत्रफल (हैक्ट.)	12220
डिप के अन्तर्गत क्षेत्रफल (हैक्ट.)	8818
फलत अवस्था पर क्षेत्रफल (हैक्ट.)	10359
अनुमानित उत्पादन (मे.टन)	310000



आयोजित गतिविधियां :-

विभिन्न उद्यानिकी कार्यक्रमों की कृषकों को अधिक से अधिक जानकारी देने एवं उद्यानिकी गतिविधियों से जुड़े विभिन्न उद्यमियों को कृषकों से जोड़े जाने के लिये जिला स्तरीय सेमीनार का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है, जिसमें लगभग 100–150 कृषकों की भागीदारी होती है। इन सेमीनार में कृषि अनुसंधान केन्द्र, सेवानिवृत व उत्कृष्टकर्ता केन्द्र एवं कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा उन्नत उद्यानिकी तकनीकी की जानकारी देकर किन्नू क्षेत्रफल में बढ़ोतरी व समुचित रख—रखाव हेतु कृषकों को प्रेरित किया जाता है ताकि कृषकों द्वारा उन्नत उद्यानिकी गतिविधियां अपनाकर अच्छा उत्पादन व अधिक आमदनी प्राप्त की जा सके।

जिला कलेक्टर एवं अध्यक्ष जिला उद्यानिकी विकास समिति की अध्यक्षता में प्रतिवर्ष बैठकों का आयोजन किया जाता है। इसमें कृषि, उद्यान एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों व प्रगतिशील कृषकों द्वारा उद्यानिकी विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों एवं सुझावों पर चर्चा की जाती है ताकि उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि की जा सके।



बूद—बूद सिंचाई आधारित किन्नू का बगीचा

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

आयोजित गतिविधियां :-

विभिन्न उद्यानिकी कार्यक्रमों की कृषकों को अधिक से अधिक जानकारी देने एवं उद्यानिकी गतिविधियों से जुड़े विभिन्न उद्यमियों को कृषकों से जोड़े जाने के लिये जिला स्तरीय सेमीनार का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है जिसमें लगभग 100–150 कृषकों की भागीदारी होती है। इन सेमीनार में कृषि अनुसंधान केन्द्र, सेवानिवृत व उत्कृष्टकता केन्द्र एवं कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा उन्नत उद्यानिकी तकनीकी की जानकारी देकर किन्नू क्षेत्रफल में बढ़ोत्तरी व समुचित रख—रखाव हेतु कृषकों को प्रेरित किया जाता है जिससे कि कृषकों द्वारा उन्नत उद्यानिकी गतिविधियाँ अपना कर अच्छा उत्पादन व अधिक आमदनी प्राप्त की जा सके। समय—समय निर्देशानुसार किन्नू महोत्सव (मेला) का आयोजन भी किया भी गया है। जिसमें किन्नू सम्बन्धित समस्त जानकारी कृषकों को उपलब्ध करवाई गई तथा किन्नू हेतु प्रतियोगिता का आयोजन कर TSS (Total Sugar Substances) और गुणवत्ता के आधार पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों से कृषकों को सम्मानित किया गया।

श्रीमान् जिला कलेक्टर एवं अध्यक्ष जिला उद्यानिकी विकास समिति की अध्यक्षता में प्रतिवर्ष बैठकों का आयोजन किया जाता है जिसमें कृषि, उद्यान एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों व प्रगतिशील कृषकों द्वारा उद्यानिकी विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों एवं सुझावों पर चर्चा की जाती है, जिससे की उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि की जा सके।



उपलब्धियां :-

राष्ट्रीय बागवानी मिशन अन्तर्गत किन्नू ग्रेडिंग व वैकिसंग प्लांट पर 35 प्रतिशत अनुदान विभाग द्वारा दिया जा रहा है। जिले में कुल 25 किन्नू ग्रेडिंग वैकिसंग प्लांट स्थापित है। किन्नू की मांग एवं लोकप्रियता को देखते हुए प्रतिवर्ष किन्नू का क्षेत्रफल एवं उत्पादन बढ़ता जा रहा है और निरन्तर इसका निर्यात भी अधिक मात्रा में किया जाने लगा है। श्रीगंगानगर जिले में उद्यान विभाग द्वारा पुलिस लाईन के पास 14.50 हैक्टेयर क्षेत्रफल में राजहंस नर्सरी स्थापित है। राजहंस नर्सरी द्वारा उच्च गुणवत्ता के किन्नू मौसमी, माल्टा व नींबू के पौधे तैयार कर कृषकों को उपलब्ध करवाये जा रहे हैं।

आगामी कार्य योजना :-

क्र.सं.	कार्य	विशेष विवरण
1	संग्रहण, भण्डारण, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग व प्रसंस्करण सुविधा	वर्तमान में उद्यान विभाग द्वारा राष्ट्रीय बागवानी मिशन अन्तर्गत छंटाई, ग्रेडिंग, वैकिसंग व पैकेजिंग इकाई स्थापना जिसकी इकाई लागत 50.00 लाख रुपये है। इस हेतु 35 प्रतिशत अनुदान सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। इस हेतु इकाई लागत बढ़ाने व अतिरिक्त अनुदान सहायता से क्षेत्र में संग्रहण, भण्डारण, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग व प्रसंस्करण इकाईयाँ स्थापित होने की अधिक संभावना है।
2	किन्नू मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन	किन्नू महोत्सव एवं किन्नू मेले के आयोजन हेतु जिला प्रशासन व राज्य सरकार द्वारा प्रतिवर्ष करवाये जाने के प्रयासरत है।
3	किन्नू एक्सीलेंस सैन्टर निर्माण व पैकेज ऑफ प्रेविट्स का प्रकाशन	किन्नू के क्षेत्रफल व बढ़ती मांग को देखते हुए गंगानगर में किन्नू एक्सीलेंस सैन्टर की तथा किन्नू मण्डी की स्थापना की जानी प्रस्तावित है। कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर द्वारा किन्नू उत्पादन हेतु उन्नत तकनीकी का समावेश करके कृषि विभाग द्वारा पैकेज ऑफ प्रेविट्स का प्रकाशन किया जाता है, जो कि कृषि एवं उद्यान विभाग के स्टॉफ को उपलब्ध करवायी जाती है। किन्नू उत्पादक कृषकों के लिए भी पैकेज ऑफ प्रेविट से उपलब्ध करवायी जा रही है।
4	kinnow pulp extraction unit	किन्नू प्रसंस्करण इकाई हेतु किन्नू पल्प एक्सट्रैक्शन यूनिट की स्थापना की जानी प्रस्तावित है। इससे किन्नू का पल्प एक्सट्रैक्ट करके प्रसंस्करण द्वारा किन्नू के विभिन्न उत्पाद जैसे जैली, वाईन, केन्डी, बनाने से किसानों की अतिरिक्त आय निर्माण हो सकती है।
5	किन्नू प्रसंस्करण स्वयं सहायता समूह के द्वारा	किन्नू प्रसंस्करण स्वयं सहायता समूह के द्वारा जैम, जैली, कैण्डी का निर्माण करने की इकाई स्थापित की जानी प्रस्तावित है।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

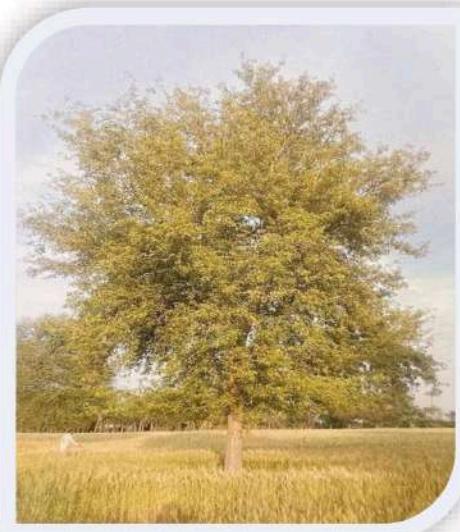
एक जिला—एक वनस्पति शीशम



राज्य सरकार द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत एक जिला—एक वनस्पति के तहत श्रीगंगानगर जिले की वनस्पति प्रजाति में शीशम वृक्ष का चयन किया गया है।

शीशम का वृक्षवनस्पतिक नाम— Dalbergia sissooपरिचय :-

शीशम को स्थानीय भाषाओं में सिस्सू या टाली के नाम से जाना जाता है तथा अंग्रेजी में इसे साधारणतया इंडियन रोजवुड के नाम से जाना जाता है। शीशम एक मध्यम से बड़े आकार का पर्णपाती पेड़ है। अनुकूल परिस्थितियों में इसकी ऊँचाई 30 मीटर तथा मोटाई 50 सेमी. व्यास हो सकती है। कम उम्र में ही शीशम की मूल जड़ तथा पार्श्व जड़ें विकसित हो जाती हैं। यह एक फलीदार वृक्ष होने के कारण वायुमण्डलीय नाइट्रोजन को स्थिर करता है, इसलिये ग्रामीणों का पसंदीदा वृक्ष है। शीशम के सूखे 1 कि.ग्रा. बीजों की संख्या 50,000 तक होती है। अगर बीज बुवाई करते हैं तो 21 दिवस में उगते हैं तथा 40 प्रतिशत तक अंकुरण दर होती है। बीजों में एक वर्ष तक अंकुरण की क्षमता होती है।

भौतिक गुण :-

शीशम की लकड़ी मध्यम कठोर होती है, जिसका घनत्व लगभग 0.6 से 0.9 ग्राम/सेमी³ होता है। कीटरोधी एवं सड़न से लड़ने की क्षमता होने के कारण शीशम की लकड़ी दीर्घायु होती है। इसकी लकड़ी में अच्छी और समान बनावट की विशेषता होती है, जिसके कारण लकड़ी की आकर्षक आकृतियां बनती हैं।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

शीशम वृक्ष का क्षेत्र विस्तारः—

भारत में मूलतः यह हिमालय के तलहटी क्षेत्र तथा बिहार, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में पाया जाता है। राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ने इस प्रजाति के वृक्ष सुधार में 30 वर्षों के शोध के बाद राजस्थान के मुख्यतः ऊपरी क्षेत्रों के लिये उपयुक्त शीशम के तीन क्लोन जारी किए हैं। इन्हें श्रीगंगानगर जिले में तथा मानक पद्धति का पालन करते हुये राज्य के इंदिरा-गांधी नहर के आसपास के क्षेत्रों में लगाया गया है। इन क्लोन्स की मुख्य विशेषता पेड़ का अधिक ऊँचाई तक सीधा तना तथा लकड़ी की अधिक उपज है।

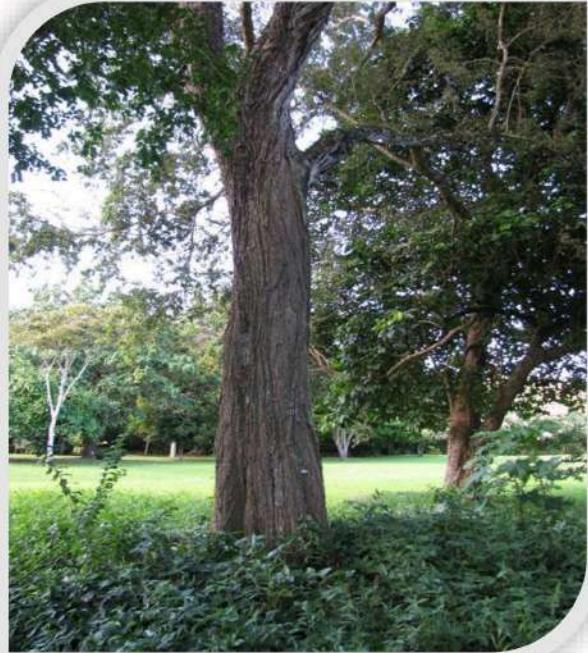


शीशम की परिस्थितिकी :-

प्राकृतिक रूप से यह नदियों के किनारे 200 मीटर से 1400 मीटर समुद्र तल से ऊँचाई पर पाया जाता है। शीशम को रेत/बजरी की मिट्टी से लेकर समृद्ध जलोढ़ मृदा में उगाया जा सकता है। इसे कई स्थानों पर लवणीय (Saline) मृदा में भी उगाया गया है। शीशम नदी किनारे बलुई मिट्टी में अग्रगामी वृक्ष प्रजाति (Pioneer tree species) के रूप में स्थापित होता है। शीशम के पौधों को बीज, कटिंग तथा जड़ प्ररोह (Root suckers) से विकसित किया जाता है।

शीशम की फिनोलॉजी:-

शीशम अपने जीवन चक्र से संबंधित विशिष्ट फिनोलॉजी पैटर्न प्रदर्शित करता है। पत्तियां आमतौर पर बसंत ऋतु में, पुरानी पत्तियों के गिरने के बाद, मार्च से अप्रैल के आसपास दिखाई देती हैं। फूल आमतौर पर देर से बसंत से गर्मियों की शुरुआत तक, मई से जून तक खिलते हैं। यह वृक्ष छोटे, सुगंधित, सफेद से लेकर हल्के पीले रंग के फूल पैदा करता है। परागण के बाद बीज फली विकसित होती है तथा ग्रीष्म ऋतु के अंत से शरद ऋतु के आरंभ तक लगभग सितम्बर से अक्टूबर तक परिपक्व होती है।

शीशम का महत्व और उपयोग:-

1. काष्ठकला एवं हस्तशिल्प :- हस्तशिल्प तथा काष्ठकला में इस्तेमाल होने वाली सभी लकड़ियों में शीशम का प्रमुख हिस्सा (35 प्रतिशत) है। वाद्य यंत्र मृदंग को शीशम की लकड़ी से ही बनाया जाता है। इस उद्योग का वार्षिक कारोबार लगभग 1500–2000 करोड़ रुपये तक का है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र, अकाल की अवस्था तथा नहरों में पानी कम होने वाले वर्षों में शीशम किसानों को आर्थिक संबल प्रदान करता है।

2. फर्नीचर उद्योग :— राजस्थान में शीशम की लकड़ी से निर्मित फर्नीचर तथा नक्काशीदार वस्तुएँ विश्व भर में निर्यात की जाती हैं।



3. पशुचारा :— पत्तियां तथा नई शाखाएं उत्तम गुणवत्ता का चारा है, जिसे सभी पालतू मवेशियों को दिया जा सकता है।

4. ईंधन :— इसकी लकड़ी में उच्च ऊष्मीय ऊर्जा होने के कारण यह बेहतर ईंधन के रूप में इस्तेमाल की जा सकती है।

5. औषधीय :— इसके बीजों से प्राप्त तेल त्वचा रोगों के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जड़ तथा लकड़ी के बुरादे को भी त्वचा संबंधी रोगों में इस्तेमाल किया जाता है। शीशम के वृक्ष के छाल एवं पत्तों में सूजन रोधी गुण होते हैं, जिसके कारण इसका उपयोग गठिया एवं जोड़ों के दर्द में उपयोग होता है। शीशम के पत्तों के रस का उपयोग घाव में संक्रमण रोकने में किया जाता है। शीशम की छाल पेट के स्वास्थ्य में उपयोगी है।

6. मृदा उर्वरकता :— इसकी जड़ों में नाइट्रीकरण होने के कारण, मिट्टी की उर्वरकता शक्ति में सुधार होता है। शीशम से भारी मात्रा में पत्तियों, फलियों आदि गिरने के कारण यह विघटित होकर मृदा को नाईट्रोजन, फार्स्फोरस और कार्बन से समृद्ध करती है।

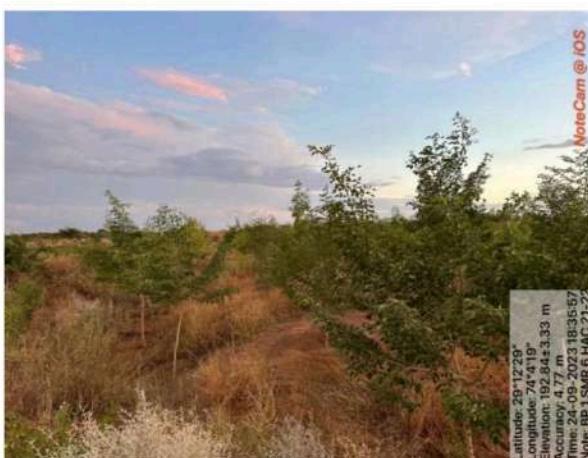
7. कृषि वानिकी :— शीशम को अक्सर कृषि वानिकी प्रणालियों में लगाया जाता है क्योंकि यह छाया प्रदान करता है और मृदा संरक्षण में मदद करता है। यह हवा को रोकने का काम भी करता है और अन्य फसलों के लिए सूक्ष्म जलवायु में सुधार करता है।

8. पर्यावरण पर्यटन :— सतत् (Sustainable) वानिकी एवं हर्बल वृक्षारोपण द्वारा जागरूक किसानों एवं अन्य रूचिकर पर्यटकों के ज्ञानवर्धन एवं ट्रेनिंग से पर्यावरण पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

शीशम जीवन चक्र :-

शीशम एक तेज वृद्धि वाला वृक्ष है। शीशम को बीज, कटिंग एवं रूट-शुट से लगाया जा सकता है। शीशम के प्रथम 2 वर्ष पानी एवं खाद की आवश्यकता होती है। शीशम के वृक्ष की ढंग से देखरेख की जाये तो 30 मीटर तक उंचाई ग्रहण कर सकता है। शीशम का तना सीधा एवं मजबूत होता है। शीशम के वृक्ष की परिपक्वता 25 वर्ष में पूर्ण होती है। इस समय वृक्ष को काटने पर अधिकतम उत्पादन लिया जा सकता है।

पौधारोपण :— वनमण्डल श्रीगंगानगर द्वारा वनभूमि में विभागीय पौधारोपण हेतु ब्लॉक प्लांटेशन में शीशम का उपयोग बहुतायात में किया गया है। श्रीगंगानगर जिले में वित्तीय वर्ष 2025–26 में वितरण हेतु 21 नर्सरियों में कुल तैयार किये जा रहे पौधों में 5–10 प्रतिशत शीशम प्रजाति के पौधे तैयार करने हेतु समस्त क्षेत्रीय वन अधिकारियों को निर्देशित किया गया है।



शीशम का वृक्ष सुन्दर के साथ—साथ मजबूती, अनुकूलनता एवं गुणों के लिहाज से पर्यावरण के लिए बहुत ही उपयोगी वृक्ष है। शीशम एक बहुउपयोगी एवं बहुआयामी वृक्ष है, जो इमारती, जलाऊ लकड़ी, रोजगार सर्जन, पर्यावरणीय एवं वैश्विक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

अतः शीशम का संरक्षण और संवर्धन जैव—विविधता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। यह वृक्ष ना केवल पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध करता है बल्कि आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

आगामी कार्ययोजना:-

- किसानों को शीशम के व्यावसायीकरण के लाभ बताने के उद्देश्य से प्रशिक्षण देना ताकि वे खेतों में अधिक से अधिक शीशम लगावें जिससे किसानों को आर्थिक लाभ हो एवं पर्यावरण को भी लाभ मिल सके।
- नई प्रौद्योगिकी अनुसार उन्नत शीशम पौध तैयार करने हेतु नर्सरियों का निर्माण।
- स्थानीय महिला स्वयं समूहों द्वारा ग्राम पंचायतों में शीशम वृक्षारोपण।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

एक जिला—एक उत्पाद

सरसों का तेल



प्रस्तावना:-

राज्य सरकार द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत एक जिला—एक उत्पाद (ODOP) के तहत श्रीगंगानगर जिले में सरसों तेल को चयनित किया गया है। इस नीति का उद्देश्य जिले की विशिष्ट कृषि उत्पादकता को पहचान कर उसे राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। श्रीगंगानगर में उगाई जाने वाली सरसों न केवल तिलहन उत्पादन के लिए बल्कि सरसों तेल, पशु चारा (खली) और जैविक खाद्य उत्पादों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

सरसों उत्पादन को बढ़ाने के लिए किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों जैसे ड्रिप सिंचाई, समकालिक फसल चक्र, उच्च उत्पादकता वाले बीज, उन्नत कीटनाशक और जैविक उर्वरक का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके अलावा, सहकारी समितियों और किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) के माध्यम से सरसों के व्यापार और प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:-

श्रीगंगानगर, जिसे राजस्थान का हरित प्रदेश भी कहा जाता है। ब्रिटिश काल में 1927 में गंग नहर की स्थापना के बाद यहां कृषि को बढ़ावा मिला। प्रारंभ में यहां मुख्यतः बाजरा, चना और ग्वार जैसी फसलें उगाई जाती थीं, लेकिन हरित क्रांति और सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के कारण सरसों की खेती में जबरदस्त वृद्धि हुई।

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार और राज्य सरकार ने इस क्षेत्र में कृषि सुधारों पर विशेष ध्यान दिया। कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान केंद्रों की मदद से उच्च गुणवत्ता वाले बीज, उर्वरक और सिंचाई प्रणालियों को विकसित किया गया, जिससे सरसों उत्पादन में निरंतर वृद्धि हुई। वर्तमान में राजस्थान भारत के कुल सरसों उत्पादन में लगभग 40 प्रतिशत का योगदान देता है, जिसमें श्रीगंगानगर का महत्वपूर्ण स्थान है।

उद्देश्य:-

एक जिला एक उत्पाद नीति के प्राथमिक लाभार्थी स्थानीय कारीगर, शिल्पकार कृषक और इन उत्पादों के उत्पादन / विनिर्माण में लगे निर्माता होंगे। इसके अतिरिक्त नीति

श्रमिकों, प्रसंस्करणकर्ताओं और निर्यातकों सहित संबद्ध हितधारकों को भी इसका लाभ प्रदान करेगी। लाभार्थियों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करके, नीति का उद्देश्य एक समावेशी विकास मॉडल बनाना है जो प्रत्येक उत्पाद से जुड़ी संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को उन्नत करता है।

- श्रीगंगानगर जिले में सरसों उत्पादन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाना।
- किसानों को आधुनिक तकनीकों, जैविक खेती और उच्च गुणवत्ता वाले बीजों से जोड़ना।
- सरसों आधारित उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देना और रोजगार के अवसर पैदा करना।
- सरसों उत्पादों के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना।
- "एक जिला एक उत्पाद नीति" और "राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2024" के तहत सरकारी योजनाओं का लाभ किसानों और उद्यमियों तक पहुँचाना।
- किसानों को डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई-कॉमर्स के माध्यम से अपने उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचाने में मदद करना।

उद्योग और रोजगार के अवसरः—

सरसों की तेल मिलों, प्रसंस्करण इकाइयों और निर्यात केंद्रों की स्थापना से श्रीगंगानगर में लगभग 500 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार अवसर उत्पन्न हुए हैं। सरसों आधारित उद्योगों में मुख्यतः निम्नलिखित कार्य शामिल हैं—

- सरसों तेल मिलें (Mustard Oil Mills) जो स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर तेल उत्पादन करती हैं।
- सरसों खली (Mustard Cake) उत्पादन, जो पशु आहार और जैविक खाद में उपयोग की जाती है।
- जैविक खाद्य उत्पाद निर्माण, जिसमें सरसों तेल आधारित स्वारस्थ्य उत्पाद शामिल हैं।
- सरसों तेल पैकेजिंग और मार्केटिंग, जिससे क्षेत्रीय ब्रांड विकसित हो रहे हैं।
- सरसों बीज अनुसंधान एवं विकास, जिससे अधिक उपज देने वाली किसमें विकसित की जा रही हैं।



सरकार, मुद्रा योजना, कृषि इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड, स्टार्टअप इंडिया, एक जिला एक उत्पाद नीति, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना एवं पंच गौरव कार्यक्रम जैसी योजनाओं के माध्यम से नए उद्यमों को सहायता प्रदान कर रही है।

श्रीगंगानगर जिले में सरसों उत्पादन की स्थिति:-

श्रीगंगानगर राजस्थान के प्रमुख सरसों उत्पादक जिलों में से एक है। यहां औसतन 1.5 से 2.5 टन प्रति हैक्टेयर सरसों की उपज प्राप्त होती है।

मानक	2022-23	2023-24
क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)	327411	310351
उत्पादकता (किलोग्राम प्रति हैक्टेयर में)	1646	1830
उत्पादन (मैट्रिक टन में)	538919	567942



अन्य जानकारी

- प्रमुख किस्में –Pusa Bold, RH-749, NRC DR-2
- प्रमुख सिंचाई स्रोत— नहर प्रणाली एवं ट्यूबवेल
- औसत वर्षा 200–300 मिमी
- सरसों का औसत बाज़ार मूल्य लगभग ₹5,500 – ₹6,500 प्रति विवर्तन

कृषि वैज्ञानिकों और सरकार की सहायता से आधुनिक तकनीकों जैसे ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती, उन्नत बीज और उर्वरकों के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हो रही है।



सरसों तेल और आर्थिक योगदानः—

सरसों तेल भारत में सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाले खाद्य तेलों में से एक है। श्रीगंगानगर में वर्ष 2023–24 में लगभग 5.6 लाख मीट्रिक टन सरसों का उत्पादन हुआ है, जिससे खाद्य तेल उद्योग को सीधा लाभ हुआ है।

सरसों तेल उद्योग से जुड़े व्यापारिक लाभ इस प्रकार हैं—

- स्थानीय बाजार सरसों तेल और खली की बिक्री में वृद्धि।
- निर्यात भारत से सरसों तेल का निर्यात बांग्लादेश, नेपाल, UAE और अन्य देशों में किया जाता है।
- श्रीगंगानगर में सरसों उत्पादन हेतु वर्ष 2023–24 में 67 इकाईयां कार्यरत हैं, जो जिले में सरसों तेल उत्पादन कर आर्थिक योगदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।



जिला स्तरीय कार्यक्रम, प्रचार-प्रसार गतिविधियां व कार्यशाला :-

- ❖ राइजिंग राजस्थान जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट – फोर्ट रजवाड़ा श्रीगंगानगर में 7 नवम्बर 2024 एवं राज विलास रिजोर्ट अनूपगढ़ 13 नवम्बर 2024 को राइजिंग राजस्थान जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया गया। इसमें एक जिला एक उत्पाद के बारे में निवेषकों के साथ परिचर्चा की गई।



पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर



जिला स्तरीय कार्यशाला:- कृषि विभाग द्वारा टांटिया यूनिवर्सिटी श्रीगंगानगर में जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें **ODOP Policy 2024** पर चर्चा की गई।

❖ भविष्य की संभावनाएँ :-

राइजिंग राजस्थान के तहत हुए सरसों तेल से सम्बन्धित एमओयू को योजना की स्थापना हेतु दस्तावेज सहायता कैपिटल व ब्याज अनुदान सहायता इत्यादि कर इन प्रोजेक्ट्स को धरातल पर उतारा।

पंच गौरव कार्यक्रम व एक जिला एक उत्पाद नीति 2024 के अन्तर्गत देय लाभ का प्रचार-प्रसार कर अधिक से अधिक हस्तकारों को लाभ देना, जिससे जिले में रोजगार व निवेश के अवसरों का सृजन किया जा सके।

नई तेल मिलों और प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना कर नए रोजगार एवं निवेश के अवसरों का सृजन करना। निर्यात क्षमता में वृद्धि जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित हो रही है।

आगामी कार्ययोजना:-

- जिले में सरसों का तेल निकालने के दौरान निकलने वाले अपशिष्ट (सरसों खल) को पशु आहार की मार्केटिंग हेतु ब्रांड लोगो व टैगलाईन विकसित किया जाना।
- उत्पाद कैटलॉग किसी भी व्यवसाय के लिए एक महत्वपूर्ण विपणन और बिक्री उपकरण है। यह ग्राहकों को आपके उत्पादों की पूरी जानकारी देने, आकर्षित करने और बिक्री बढ़ाने में मदद करता है। इस हेतु जिले के सरसों उत्पाद को एवं विक्रेताओं की सूचना का संकलन करते हुए पुस्तिका तैयार करना।
- सरसों के कच्ची घाणी के तेल cold pressed or wood pressed oil की मांग बढ़ती जा रही है, क्योंकि तेल की गुणवत्ता wood pressed oil/ cold pressed में उच्चतम रहती है। अतः सरसों के तेल की ऐसी units स्थापित करना।
- पीली सरसों व काली सरसों के तेल की GI tagging एवं पशु-आहार के रूप में सरसों की खल की GI tagging करना।
- जिले में ओडीओपी हेतु टेस्टिंग लैब स्थापित करना ताकि "One District One Product (ODOP)" के तहत सरसों के तेल की गुणवत्ता की जांच संभव हो सके।
- जिले में ODOP (सरसों तेल) हेतु सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना करना ताकि ओडीओपी हेतु वर्कशॉप, प्रशिक्षण, योजना की जानकारी, प्रदर्शनी इत्यादि लगवाई जा सके।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

एक जिला— एक खेल

एथलेटिक्स



प्रस्तावना : —

पंच गौरव के अन्तर्गत “एक जिला एक खेल” हेतु सादुलशहर स्टेडियम में एथलेटिक्स खेल का चयन किया गया है। खेल के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। खेल शारीरिक फिटनेस, सहनशक्ति, और गति को बेहतर बनाने में मदद करता है, साथ ही मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास भी बढ़ाता है। खेलों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और खेल भावना को बढ़ावा मिलता है तथा खेलों में भाग लेने से लोगों को एक साथ आने और सामाजिक संबंध बनाने का अवसर मिलता है।

उद्देश्य :—

एक जिला—एक खेल (ODOS) पहल एक रणनीतिक दृष्टिकोण है, जिसे राजस्थान के प्रत्येक जिले में एथलेटिक प्रतिभा के उन्नयन एवं विकास हेतु डिजाइन किया गया है, जिसमें स्थानीय समुदाय के साथ प्रतिध्वनित होने वाले एक विशिष्ट खेल पर जोर दिया जाता है। यह कार्यक्रम उन खेलों की पहचान करने और उन्हें प्राथमिकता देने पर केंद्रित है, जो या तो पहले से ही लोकप्रिय हैं या जिनमें प्रत्येक जिले में विकास की संभावना है। जनसांख्यिकीय कारकों और खेल अधिकारियों द्वारा निर्धारित दिशा—निर्देशों पर विचार करते हुए इस प्रयास का समर्थन करने के लिए, स्थानीय प्रतिभाओं को विकसित करने के लिए विशेष खेल अकादमियाँ बनाई जाएँगी, साथ ही मौजूदा खेल बुनियादी ढाँचे में महत्वपूर्ण वृद्धि की जाएगी। ODOS का एक प्रमुख पहलू हर जिले में आधुनिक खेल परिसरों की स्थापना करना है, जो शीर्ष—स्तरीय सुविधाओं से सुसज्जित हैं जो एथलीटों को उनके चुने हुए खेलों में प्रशिक्षण, प्रतिस्पर्धा और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं। इन खेल परिसरों में आवासीय सुविधाओं को शामिल करने से प्रशिक्षण वातावरण में और सुधार होगा, जिससे एथलीट दैनिक जीवन की व्यस्तताओं से दूर अपने विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगे। इस व्यापक सहायता प्रणाली का उद्देश्य खेलों में समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए स्थानीय प्रतिभाओं का पोषण करना है। स्थानीय संस्कृति और रुचियों से जुड़े विशिष्ट खेलों को प्राथमिकता देकर, इस पहल का उद्देश्य समुदाय के भीतर गर्व और पहचान की भावना को बढ़ावा देना है। जैसे—जैसे एथलीट उच्च स्तर पर प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

करेंगे, वे युवा पीढ़ी को भाग लेने के लिए प्रेरित करेंगे, जिससे एक स्थायी खेल संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। अंततः, ODOS स्थानीय खेलों को आगे बढ़ाने और उनका समर्थन करने के लिए एक मजबूत ढांचा तैयार करेगा, जिससे एथलेटिक्स में दृश्यता, भागीदारी और सफलता बढ़ेगी। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं। प्रत्येक जिले में एक खेल की लोकप्रियता तथा पूर्व की उपलब्धियों के आधार पर उस जिले में खेल का चयन कर विशेष सुविधायें प्रदान करना।

एथलेटिक्स श्रीगंगानगर एक नज़र :-

एथलेटिक्स खेल में श्रीगंगानगर के करीब 16 खिलाड़ी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल चुके हैं।



सतबीर सिंह अटवाल

पूर्व राष्ट्रीय रिकॉर्डधारी भाला फेंक (79.68 मी.)
एशियन गेम्स 1992 में भाग लिया



नरसी राम

एशियन गेम्स 1994 में भाग लिया
(4x400 रिले दौड़)



महावीर प्रसाद सैनी, द्रोणाचार्य अवार्ड (वर्ष 2024)



जगदीश बिश्नोई

1. ओलम्पियन सिडनी वर्ष 2000 (भाला फेंक)
2. एशियन गेम्स 1998 में भाग लिया
3. बेस्ट थ्रो 79.67मी.



सोहन बराड़

पैरा ओलम्पिक खेल अटलांटा 1996 में
भाग लिया

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर



पूर्व के प्रदर्शन को देखते हुए श्रीगंगानगर में महाराजा गंगासिंह स्टेडियम में 7.00 करोड़ रुपये की लागत से एथलेटिक्स सिंथेटिक ट्रैक बनाया गया है। बालक एथलेटिक्स आवासीय अकादमी श्रीगंगानगर में स्थापित की गई इसमें राज्य स्तर से प्रतिवर्ष 30 खिलाड़ियों का चयन कर निःशुल्क भोजन, आवास, शिक्षा व नियमित प्रशिक्षण दिया जाता है। अकादमी खिलाड़ियों हेतु 1.80 करोड़ रुपये की लागत से आवासीय भवन बनाया गया है।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर



बसंत

जूनियर नेशनल गोल्ड मैडल 2023–2024 एथलेटिक्स अकादमी श्रीगंगानगर

आयोजित गतिविधियां:-



दिनांक 12.12.2024 को

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत जिला स्तर पर एथलेटिक्स खेल की प्रदर्शनी लगाई गई तथा माननीय प्रभारी मंत्री महोदय श्रीमान् सुमित गोदारा जी द्वारा निरीक्षण एवं अवलोकन किया गया। सादुलशहर में करीब 1.50

करोड़ रुपये की लागत से स्टेडियम निर्माण एवं विकास कार्य प्रगतिरत है। एथलेटिक्स ट्रैक की मार्किंग कर दी गई है तथा ग्रास (दूब) लगाने का कार्य भी पूरा हो चुका है। ट्रैक निर्माण होते ही अल्पकालीन एथलेटिक्स प्रशिक्षक की नियुक्ति कर प्रशिक्षण कार्य शुरू कर दिया जायेगा। साथ ही खेलो इण्डिया योजनान्तर्गत सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक निर्माण हेतु प्रस्ताव विभाग के माध्यम से केन्द्र सरकार को भिजवाया जा चुका है। वर्ष 2024–25 में श्रीगंगानगर जिले के खिलाड़ी आर्यन चौधरी द्वारा जूनियर नेशनल पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक प्राप्त किया गया तथा अंकुल द्वारा साउथ एशियन अण्डर-20 एथलेटिक्स

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

चैम्पियनशिप—2024 में रजत पदक प्राप्त किया गया। इसके साथ ही जिले के एथलेटिक्स प्रशिक्षक श्री महावीर प्रसाद सैनी को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2024 में द्रोणाचार्य अवार्ड से सम्मानित किया गया।



पंच गौरव कार्य हेतु आगामी कार्ययोजना :-

- जिले के स्टेडियम, ट्रेनिंग सेंटर, हॉस्टल आदि का उन्नयन, खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्कूलों व कॉलेजों में खेलों का महत्व स्थापित करना।
- खिलाड़ियों के उचित प्रशिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करना।
- आवश्यकतानुसार खिलाड़ियों को आवास और पोषण संबंधी सहायता के लिए उचित आवासीय सुविधाएं प्रदान करना।
- खेलों से संबंधित आवश्यक जानकारी (सुविधाओं, आयोजनों, खिलाड़ियों को सहायता आदि) ऑनलाइन और सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर उपलब्ध करवाना।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

एक जिला— एक पर्यटन स्थल

गुरुद्वारा बुड्डा जोहड़



ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—

शहीद नगर गुरुद्वारा बुड़ा जोहड़ राजस्थान के श्रीगंगानगर में स्थित है। शहीद नगर गुरुद्वारा बुड़ा जोहड़ के साथ सिख इतिहास का सम्बन्ध 17 वीं शताब्दी की शुरूआत में जुड़ता है। बुड़ा जोहड़ का अर्थ है पुराना छपड़। यहां 80 मुरब्बे नीची जगह है, जहां बरसात के मौसम में कई मीलों तक का पानी नीचे की तरफ चलता हुआ इकट्ठा हो जाता था।

यह एक ऐतिहासिक गुरुद्वारा है, जिसका इतिहास 1740 ईस्वी का है। इसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रकाशित हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब दुनिया का एक ऐसा महान ग्रन्थ जिसमें सिख गुरुओं के साथ—साथ, भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों के, भिन्न भिन्न जातियों के 15 भगतों की वाणी सम्मिलित है।





आगामी कार्ययोजना:-

- बुड्डा जोहड़ में सिक्ख इतिहास के बारे में जानकारी देने हेतु लाइब्रेरी और श्रीगुरुनानक देव जी की यात्राओं के बारे में जानकारी देने हेतु एक आर्ट गैलरी का निर्माण।
- गुरुद्वारा में मेला अवधि दौरान पर्यटन विभाग से आमंत्रित लोक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाना ताकि आने वाले श्रद्धालुओं पर्यटकों को राज्य की कला एवं संस्कृति व लोक कलाओं से रुबरु करवाया जाए।
- गुरुद्वारा बुड्डा जोहड़ में लंगर हॉल का निर्माण।

पंच गौरव कार्यक्रम

श्रीगंगानगर

जिला प्रशासन, श्रीगंगानगर